अंक – 1, जुलाई 2015 – जून 2016

# एम.एल.के. कॉलेज बुलेटिन

(महारानी लाल कुँवरि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलरामपुर)

नैक प्रत्यायित ग्रेड ''ए''

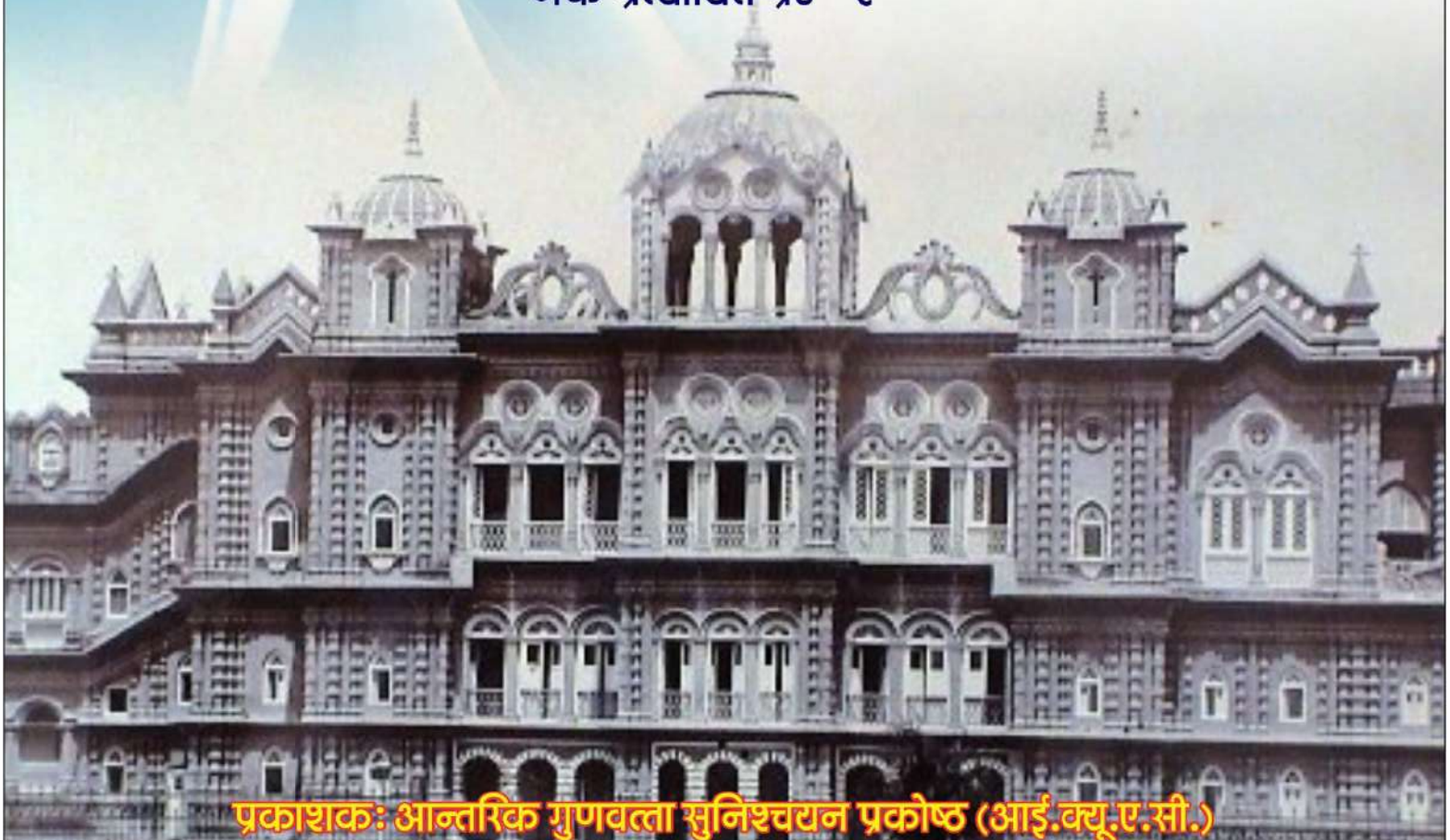

प्रकाशकः आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.)

## सम्पादक मण्डल:

संरक्षकः
डा.नरेन्द्र कुमार सिंह
प्राचार्य

प्रधान सम्पादकः
डा. श्रीप्रकाश मिश्र
एसो. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग

सम्पादकः
डा. मोहिउद्दीन अंसारी
एसो. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान
डा. जे.पी. पाण्डेय
एसो. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान
डा. आर.के. पाण्डेय
एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान
डा. तबस्सुम फरकी
एसो. प्रोफेसर, इतिहास
डा. सदगुरू प्रकाश
असि. प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान

प्रबन्ध सम्पादकः
डा. आशीष कुमार लाल
असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

रचना एवं कलाकृतिः
डा. आलोक कुमार शुक्ल
असि. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान
डॉ. राजीव रंजन
असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान
श्री अविनाश सिंह
असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.

कवर अग्र पृष्ठ-
परिसर स्थित सिटी पैलेस
कवर पश्च पृष्ट-
परिसर स्थित स्टेच्यू हॉल


## प्रबन्ध समिति पदाधिकारी

आदि संस्थापक
महराजा सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह जी

संस्थापक
महराजा बहादुर धर्मेन्द्र प्रसाद सिंह जी

उपाध्यक्ष
राजकुमार जयेन्द्र प्रताप सिंह जी

सचिव
कर्नल (रिटा.) आर.एस. भण्डारी

संयुक्त सचिव
श्री बृजेश कुमार सिंह

## महाविद्यालय एक दृष्टि में...

महाविद्यालय की स्थापना सन 1955 में ऋषिकल्प महाराजा बलरामपुर श्री पाटेश्वरी प्रसाद सिंह की कृपा दुष्टि से अपनी मां महारानी लाल कुँवरि की स्मृति में की गयी जिसका उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री के0एम0 मुंशी ने किया। प्रारम्भ में स्नातक स्तर तथा कुछ ही वर्षों पश्चात स्नातकोत्तर स्तर का उत्कृष्ट अध्ययन महाविद्यालय में होने लगा। इसकी उत्कृष्टता से अभिभूत होकर 1969 में तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री चन्द्रभान गुप्त ने कहा था, ''इस कालेज को यदि पहले देखा होता तो गोरखपुर विश्व विद्यालय, गोरखपुर यहीं बनवाता। वर्तमान में कला स्नातक में 13 विषय, विज्ञान स्नातक में 7 विषय, बी0सी0ए0, बी0बी0ए0, बी.काम. तथा बी0एड0 कार्यक्रम संचालित है। स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी, राजनीतिशास्त्र, संस्कृत, मनोविज्ञान, भूगोल विषय का अध्ययन मानविकी के अन्तर्गत किया जाता है वहीं विज्ञान संकाय में भौतिकी, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित तथा प्राणि विज्ञान का अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भ में यह कॉलेज आगरा विश्वविद्यालय आगरा से तत्पश्चात् 1957 में गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर से सम्बद्ध था तथा 1975 से डा0रा0म0लो0 अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद से सम्बद्ध था। अब वर्ष 2015 से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर से सम्बद्ध होकर गुणवत्तापरक उच्च शिक्षा व्यवस्था में संलग्न है।

## आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ टिप्पणी

श्रेष्ठ शिक्षा के लिए शुद्धतम बुद्धि ही आधार है। विशुद्ध बुद्धि में ही शिक्षा ठीक–ठाक प्रतिष्ठित होती है। इस प्रकार की प्रतिष्ठित उच्चतर शिक्षा की प्रप्ति हेतु यह अंक प्रकाशित करना छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए ज्ञानवर्धक होगा।

## प्राचार्य की कलम से...

मैं उन लोगों की सराहना करने में बेहद हर्षित हूँ जिन्होंने इस खूबसूरत समाचार पत्र को स्वरूप देने में अहम भूमिका निभायी। मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

## सम्पादकीय

जो शिक्षा शाश्वत शान्ति, मुक्ति, ग्राहय अग्राहय का निर्णय, सुख दुख का विवेचन, भूत भविष्य का ज्ञान न कराये वह वास्तविक शिक्षा नहीं होती है। वास्तविक शिक्षा की प्राप्ति में सूचना का प्रकाशन भी सहायता करता है। इस अंक में महाविद्यालय की गतिविधियों तथा सूचनाओं का प्रकाशन छात्रों को प्रेरित करने तथा वास्तविक शिक्षा की प्राप्ति में सहायक होगा।

## महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

संस्थापक अध्यक्ष–
महाराजा सर धर्मेन्द्र प्रसाद सिंह

| | |
|---|---|
| 1. न्यायमूर्ति यू0सी0 श्रीवास्तव | अध्यक्ष |
| 2. युवराज जयेन्द्र प्रताप सिंह | उपाध्यक्ष |
| 3. कर्नल(रिटा.) आर0एस0 भण्डारी | सचिव / प्रबन्धक |
| 4. श्री बी0के0 सिंह | संयुक्त सचिव |
| 5. श्री ए0के0 जग्गी | सदस्य |
| 6. श्री के0सी0 सिन्हा | सदस्य |
| 7. श्री गोपेन्द्र सिंह | सदस्य |
| 8. डा. एन.के. सिंह (प्राचार्य) | पदेन सदस्य |
| 9. डा0 अरविन्द कुमार द्विवेदी, | सदस्य |
| 10. डा0 प्रेम कुमार सिंह | सदस्य |
| 11. श्रीमती अमिता श्रीवास्तव, | सदस्य |

# छात्र परिषद

माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के आदेश का अनुपालन करते हुए महाविद्यालय में छात्र संघ के स्थान पर छात्र परिषद की व्यवस्था सुनिश्चित है। छात्र परिषद का प्रमुख एम0ए0 / एम0एस0सी0 द्वितीय वर्ष का वह छात्र होता है जो प्रथम वर्ष की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करता है। शेष सभी कक्षाओं के सर्वोच्च अंक पाने वाले छात्र परिषद के सदस्य होते हैं।

# अधिसूचना

महारानी लाल कुंवरि स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलरामपुर की नियमावली एवं निर्देशिका 2015–16 के पृष्ठ 15 पर उल्लिखित धारा–12 कें अनुसार आज दिनांक–01.12.2015 को सत्र 2015–2016 के लिए महाविद्यालय छात्र परिषद का गठन निम्नलिखित रुप में किया जाता है। छात्र परिषद दिनांक–01.12.2015 से विधिवत प्रवृत्त मानी जायेगी–

| क्रम सं0 | महा0अनु0 | नाम | कक्षा | पद |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 18686 | खुशाली शर्मा | एम0ए0 द्वितीय मनोविज्ञान | परिषद प्रमुख |
| 2. | 18677 | किरन देवी | एम0एम0 द्वितीय संस्कृत | सदस्य |
| 3. | 0548 | शिवम सक्सेना | एम0एस0सी0 द्वितीय रसायन विज्ञान | सदस्य |
| 4. | 17607 | उर्मिला देवी | एम0ए0 प्रथम भूगोल | सदस्य |
| 5. | 19602 | साक्षी अग्रवाल | एम0एस0सी0 प्रथम गणित | सदस्य |
| 6. | 8507 | सुप्रिया मिश्रा | बी0ए0 तृतीय | सदस्य |
| 7. | 15023 | खेमराज चौरसिया | बी0एस0सी0 तृतीय | सदस्य |
| 8. | 17277 | सिमरनजीत कौर | बी0काम तृतीय | सदस्य |
| 9. | 22401 | जया सिंह | बी0बी0ए0 तृतीय | सदस्य |
| 10. | 14085 | वैशाली जायसवाल | बी0एस0सी0 द्वितीय | सदस्य |
| 11. | 16537 | मिनी सिंह | बी0काम द्वितीय | सदस्य |
| 12. | 22302 | आरती मौर्य | बी0बी0ए0 द्वितीय | सदस्य |
| 13. | 1343 | अलका वर्मा | बी0ए0 प्रथम | सदस्य |
| 14. | 1720 | रवि कुमार गुप्ता | बी0ए0 प्रथम | सदस्य |
| 15. | 1297 | प्रिया शुक्ला | बी0ए0 प्रथम | सदस्य |
| 16. | 12632 | गरिमा पाठक | बी0एस0सी0 प्रथम | सदस्य |
| 17. | 11044 | अभय कुमार | बी0एस0सी0 प्रथम | सदस्य |
| 18. | 11229 | वर्षा पटेल | बी0एस0सी0 प्रथम | सदस्य |
| 19. | 16064 | शुभ्रा | बी0काम0 प्रथम | सदस्य |
| 20. | 22153 | दीप शिखा तिवारी | बी0सी0ए0 प्रथम | सदस्य |
| 21. | 22012 | नूर मोहम्मद खान | बी0बी0ए0 प्रथम | सदस्य |
| 22. | 104 | प्रशान्त सिंह | बी0एड0 | सदस्य |
| 23. | 15580 | प्रियंका दूबे | बी0एस0सी0 तृतीय | सदस्य |
| 24. | 17645 | मोईन खान | एम0ए0 प्रथम हिन्दी | सदस्य |
| 25. | 17535 | रजत प्रकाश पाण्डेय | एम0ए0 प्रथम राजनीति विज्ञान | सदस्य |
| 26. | 13181 | अशोक कुमार यादव | बी0एस0सी0 द्वितीय | सदस्य |
| 27. | 5338 | सत्यप्रति पाण्डेय | बी.ए. द्वितीय वर्ष | सदस्य |

नोट– बी0सी0ए0 द्वितीय एवं तृतीय वर्ष का परीक्षाफल घोषित नहीं होने के कारण उक्त विषय में सदस्यों के नाम की घोषणा नहीं हो सकी है। परीक्षाफल घोषित होने के उपरान्त उक्त कक्षाओं में सदस्यों के नाम की घोषणा की जायेगी।

# कविता में कलावाद या शास्त्रीयतावाद

डा0 चन्देश्वर पाण्डेय,
एसो. प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग

कविता स्वयं लिख जाती है वह लिखी नहीं जाती है। यानी कविता लिखना और कवि होना एक तरह से ईश्वरीय विधान है। कविता अगर समय की दबंगीयत का प्रतिकार है, वह कमजोर की जबान है तो कोई कवि कविता के सम्भव होने की प्रतीक्षा में कब तक चुप्पी साधकर बैठा रह सकता है। यह तो वही बात हो गयी कि किसी बड़े जुल्मी या आतताई के अंत के लिये लोग बाग स्वयं संगठित प्रतिकार या प्रतिरोध के बदले किसी अवतार की प्रतीक्षा करें।

पहले से किसी बने बनाये ढांचे में कविता लिखना एक तरह का शास्त्रीयतावाद है। अगर ऐसा ही होता तो कविता आदिकाल से अपने रुप या शिल्प संरचना को लेकर स्थिर या जड़ होती। मगर दुनिया में किसी भाषा में ऐसा नहीं होता है अगर ऐसा होता तो आज भी हमारी हिन्दी में दोहा, चौपाई या कवित्र की ही शैली या संरचना में कविगण लिख रहे होते। हिन्दी में आधुनिक काल के भीतर ही देखा जाये तो भारतेन्दु युग से आज तक कविता ने शिल्प संरचना को लेकर एक लम्बी यात्रा की है उसनें कई तरह के बदलाव देखें है। शास्त्रीयतावादी इस बदलाव के प्रति हमेशा अपनी नाक भौहें सिकोड़ते रहते हैं। अगर महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में ही निराला जैसी शख़्शियत कविता में नई प्रयोगशीलता के साथ सामने नहीं आती तो हिन्दी कविता बन्द दरवाजे के भीतर दम तोड़ रही होती या तोड़ चुकी होती । पर समय समय पर निराला जैसी शख़्शियते अपनी अपनी भाषाओं में कविता के लिए नये रास्ते तलाशती रहती है। पुराने शिल्प को लेकर कविता में यह प्रवृत्ति मध्यकालीन रीतिवादी कवियों में ज्यादा दिखायी देती है। समकालीन कविता में ही ऐसी कोशिश एक तरह का रीतिवाद है। इस तरह के रीतियों या रुढ़ियों से आज की कविता को बचाये जाने की जरुरत है। हमारे बीच में आज भी कई ऐसे कवि हैं जिनकी कविताओं में क्राफ्टिंग पूर्व नियोजित होती है यह भी एक किस्म का कलावाद ही है।

मेरी दृष्टि से कविता को प्रभावशाली बनाता है उसका कथ्य। यह बात दुहराते रहने या स्मरण रखने के लिए है। अगर कवि की बात में ही दम नहीं तो कविता प्रस्तुति के आधार पर प्रभावशाली नहीं हो सकती है। हाँ, कला–शिल्प और संरचना के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। इससे भाषा का मुद्दा भी जुड़ा हुआ है। पर कला पर जरूरत से ज्यादा जोर कवि को अंततः कलावाद की तरफ ले जाता है। हिन्दी कवि रघुवीर सहाय यूँ ही नहीं कहते कि जहाँ कला ज्यादा होगी, वहाँ कविता कम होगी। अर्थात् सच्ची कविता की जान तो उसके कथ्य में होती है। कविता में कथ्य –शिल्प का बेहतरीन परिपाक उसे बेशक श्रेष्ठता की ओर ले जाता है। इससे भला कौन इंकार करेगा! अगर आप अपनी कविताओं को बढ़िया तरीके से, नाटकीय अंदाज में सुना सकते हैं तो यह कविता को प्रस्तुत करने की कला हो सकती है। इससे भी यह जरूरी नहीं कि वह एक श्रेष्ठ कविता है। अगर आवाज का ही जादू सर्वोपरि होता तो फैज अहमद फैज की गजलें, नज्में आज उनके मरणोपरांत महत्वपूर्ण नहीं होतीं। सच्ची कविता के लिए सिर्फ उक्ति वैचित्र्य का होना भी मायने नहीं रखता है। मेरा अब भी यकीन है कि सच्ची और प्रभावशाली कविता अभिधा की सादगी में ही महत्वपूर्ण होती है। कुछ कवि शताब्दियाँ लाँघ जाते हैं अपनी कविताई के दम पर। कुछ कवि अपनी मृत्यु के तत्काल बाद विस्मृत होने लगते हैं। अगर निराला या मुक्तिबोध ,नागार्जुन या धूमिल, गोरख पांडे या वीरेन डंगवाल की कविता महत्वपूर्ण बनी हुयी है तो अपने कथ्य और उसमें समाहित जन की या लोक की पीड़ा को लेकर ही। कवि के लिए लोक का अनुभव विशेष मायने रखता है। अगर कवि बड़े शहर में जनजीवन की हलचलों से दूर एकाकी और सुविधाभोगी जीवन जीने का अभ्यासी है तो वह अपनी कविता में उक्ति वैचित्र्य या जुमलेबाजी के जरिए ऐसी कविताएँ रचेगा जो या तो दार्शनिकता का पुट लिए होंगी या कोरी वैचारिक या स्पंदनहीन। कविता में लोकजीवन या जनजीवन से अलग–थलग कवि 'क्राफ्ट्स' पर चाहे जितनी मेहनत करे और साल में किसी एक कविता की रचना करे, पर कविता में वस्तु महत्वपूर्ण नहीं है तो वह असरदार नहीं हो सकती है। लोगबाग क्यों कहते हैं कि 'घी का लड्डू टेढ़ो भला' ! अगर लड्डू देशी शुद्ध घी का है तो ढेढ़ा होने पर भी स्वाद में बेहतरीन होगा। यहाँ पर घी के टेढ़े लड्डू के लिए भी लोक की स्वीकृति दिखाई देती है। यह बात कविता के कथ्य–शिल्प पर भी लागू होती है। कथ्य दमदार हो तो कविता स्वीकार की जा सकती है, पर खाली शिल्प के दम पर उसका लोक के आगे टिकना कठिन है। वैसे भी घी के लड्डू का एकदम सुंदर और गोल होना बहुत मुश्किल होता है। ऐसे ही दमदार कथ्य वाली कविता शिल्प में तोड़–फोड़ करते हुए सामने आती है। इसका मतलब यह नहीं है कि कवि को अपनी कविता में शिल्प –संरचना या कलापक्ष के प्रति लापरवाह होना चाहिए। ऐसे मेरा मानना है कि कविता में कथ्य–शिल्प दोनों का उम्दा होना एक आदर्श और समुन्नत स्थिति है।

# महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त स्वर्ण पदक

## परीक्षा वर्ष 2015

1. कला स्नातकोत्तर– अमरेन्द्र कुमार लाल पुत्र श्री जवाहर लाल, एम0ए0 द्वितीय मनोविज्ञान
2. कला स्नातक– शालू गुप्ता पुत्री श्री उमेश कुमार गुप्ता
3. विज्ञान स्नातकोत्तर– विभा पाण्डेय पुत्री श्री श्रीकृष्ण पाण्डेय, एम0एस0–सी0 द्वितीय वनस्पति विज्ञान
4. विज्ञान स्नातक– स्वर्णिमा पुत्री श्री चन्द्र प्रकाश
5. वाणिज्य स्नातक– बी0काम0 आनन्द विजय सिंह पुत्र श्री दिनेश सिंह
6. बी0एड0– मोनी सिंह पुत्री श्री धर्मपाल सिंह
7. संस्थापक स्वर्ण पदक– विभा पाण्डेय पुत्री श्री श्रीकृष्ण पाण्डेय, एम0एस0सी0 द्वितीय वनस्पति विज्ञान

## स्पीकमैके

भारतीय राष्ट्रीय संगीत तथा संस्कृति को युवाओं में बढ़ावा देने के उद्देश्य से महाविद्यालय स्पीकमैके (सोसाइटी फार द प्रमोशन आफ इण्डियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर एमंग यूथ) का चैप्टर है। इस क्रम में शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित ख्यातिलब्ध कलाकार अपनी प्रस्तुति देते हैं साथ ही महाविद्यालय के छात्र स्टेट, नेशनल तथा इंटरनेशनल कन्वेन्शन में प्रतिभाग भी करते हैं।

इस वर्ष स्टेट कन्वेन्शन 9 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2015 तक डेफाडिल पब्लिक स्कूल मिर्जापुर में सम्पन्न हुआ इसमें अपने महाविद्यालय से मोईन खान और अनुराग अवस्थी ने प्रतिभाग किया। नेशनल कन्वेन्शन 13 से 19 दिसम्बर 2015 तक आई0टी0आई0 रुढ़की में आयोजित हुआ जिसमें मोईन खान एम0एम0 प्रथम, आर्यव्रत त्रिपाठी एम0एम0 प्रथम, सूरजमणि तिवारी बी0ए0 तृतीय वर्ष ने प्रतिभाग किया। इंटरनेशनल कन्वेन्सन 9 से 15 मई 2016 तक हुआ जिसमें सुमित सोनी, सत्यवीर सिंह, आर्यव्रत त्रिपाठी तथा मोईन खान ने हिस्सा लिया।

महाविद्यालय सभागार में बलरामपुर चैप्टर के अन्तर्गत लोक कलाकारों द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति

## महाविद्यालय पत्रिका ''अरुणाभा''

पत्रिका का विमोचन करते हुए
श्रीमन् राजकुमार जयेन्द्र प्रताप सिंह जी (मध्य में),
सचिव श्री आर.एस. भण्डारी (बायें) एवं डॉ. पी.पी. सिंह (दायें)

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए
प्राचार्य डॉ. एन.के. सिंह

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर एन.सी.सी. कैडेट को सम्मानित करते हुए प्रबन्ध समिति सचिव कर्नल (रिटा.) आर.एस. भण्डारी

## संस्थापक सप्ताह पाठ्य सहगामी क्रियाएं एक दृष्टि में

मेंहदी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राएं।

''भ्रूण हत्या'' नाटक में प्रतिभागी छात्र–छात्राओं के साथ महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाएं

क्विज़ प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र

वाद–विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र

## अन्तर्संकाय विविधा प्रतियोगिता के कुछ दृश्य

एकल गायन प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय का छात्र

फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में दिव्यांग की वेषभूषा में महाविद्यालय का छात्र

एकल नृत्य (छात्रा) की एक भावपूर्ण मुद्रा

रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त रंगोली

प्रकाशोत्सव के अवसर पर मंचासीन प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष श्रीमन् राजकुमार जयेन्द्र प्रताप सिंह (मध्य में) एवं सदस्यगण

# भारत स्काउट एवं गाइड (रोवर्स रेन्जर्स)

प्रवेश/निपुण प्रशिक्षण शिविर समारोह में बायें से
श्री राकेश गुप्ता, प्राचार्य डॉ. एन.के. सिंह, डा. ए.के. सिंह एवं डा. आर.के. सिंह

प्रवेश/निपुण प्रशिक्षण शिविर समारोह में
प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए रोवर्स एवं रेन्जर्स

# महाराजा सर भगवती प्रसाद सिंह अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेन्ट

हॉकी उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि को
गॉर्ड ऑफ ऑनर देने की मुद्रा में एन.सी.सी. कैडेट्स

हॉकी उद्घाटन समारोह में
सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं

गुब्बारा एवं शान्ति प्रतीक कबूतर उड़ाकर हॉकी टूर्नामेन्ट का शुभारम्भ करते हुए
श्रीमन् राजकुमार जयेन्द्र प्रताप सिंह जी एवं प्राचार्य डॉ. एन.के. सिंह

हॉकी उद्घाटन समारोह में अपार छात्रों एवं अपार जनसमूह को
सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डा. एन.के. सिंह

हॉकी टूर्नामेन्ट उद्घाटन मैच में खिलाडियों से परिचय प्राप्त करते हुए
मुख्य अतिथि श्रीमन् राजकुमार जयेन्द्र प्रताप सिंह जी

हॉकी टूर्नामेन्ट के फाइनल मैच में खिलाडियों से परिचय प्राप्त करते हुए
मुख्य अतिथि प्रोफेसर रजनीकान्त पाण्डेय, कुलपति सिद्धार्थ वि.वि, सिद्धार्थनगर

# ''शीलवृत्तफलं श्रुतम्''

## विनम्रता और आचरण विद्या के फल हैं

महाविद्यालय का आदर्श वाक्य

मुद्रकः स्वास्तिक बिजनेस प्वाइंट, बलरामपुर